हुमायूं मुगल साम्राज्य का दूसरा शासक था, जिसने 1530 से 1556 तक शासन किया। उसका जन्म 6 मार्च, 1508 को हुआ था और वह मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर और महम बेगम का सबसे बड़ा पुत्र था। हुमायूँ के शासनकाल को कई चुनौतियों और संघर्षों के साथ-साथ निर्वासन की अवधि से चिह्नित किया गया था। हुमायूँ के बारे में मुख्य बातें इस प्रकार हैं:

1. प्रारंभिक जीवन**:** हुमायूँ ने राजसी शिक्षा प्राप्त की और छोटी उम्र से ही नेतृत्व के लिए तैयार हो गए। उन्होंने कला, कविता और खगोल विज्ञान में रुचि दिखाई।

2. सिंहासन पर आरोहण**:** 1530 में अपने पिता बाबर की मृत्यु के बाद, हुमायूँ 22 साल की उम्र में मुगल सिंहासन पर बैठे। उन्हें एक साम्राज्य विरासत में मिला जो अभी भी भारत में अपनी शक्ति को मजबूत करने की प्रक्रिया में था।

3. प्रारंभिक चुनौतियाँ**:** सम्राट के रूप में हुमायूँ के प्रारंभिक वर्ष आंतरिक विद्रोहों से चिह्नित थे, विशेष रूप से उसके भाइयों कामरान, अस्करी और हिंडाल से, जिन्होंने उसके अधिकार को चुनौती देने की कोशिश की थी।

4. भारत की विजय**:** हुमायूँ की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि भारतीय उपमहाद्वीप पर उसका आक्रमण था। 1526 में, उन्होंने उत्तरी भारत में एक सेना का नेतृत्व किया और पानीपत की पहली लड़ाई में दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोधी को हराया। इससे भारत में मुग़ल साम्राज्य की शुरुआत हुई।

5. चुनौतियाँ और निर्वासन**:** प्रारंभिक सफलताओं के बावजूद, हुमायूँ को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिनमें क्षेत्रीय शासकों के साथ संघर्ष और अपने साम्राज्य के भीतर विद्रोह शामिल थे। उन्हें कई बार निर्वासन के लिए मजबूर किया गया और उन्होंने फारस (आधुनिक ईरान) में शरण ली।

6. सत्ता में वापसी**:** सफ़ाविद शासक शाह तहमास प्रथम की मदद से, हुमायूँ एक सेना इकट्ठा करने और 1555 में भारत लौटने में सक्षम हुआ। उसने सूरी राजवंश से दिल्ली और आगरा पर पुनः कब्ज़ा कर लिया।

7.पानीपत की लड़ाई **(1556):** अपनी वापसी पर, हुमायूँ को अफगान शासक सिकंदर सूरी के खिलाफ 1556 में पानीपत की लड़ाई में एक और महत्वपूर्ण लड़ाई का सामना करना पड़ा। हुमायूँ विजयी हुआ और उत्तर भारत में मुगल शासन को मजबूत किया।

8. कला के संरक्षक**:** हुमायूँ कला, संस्कृति और साहित्य में अपनी रुचि के लिए जाने जाते थे। उन्होंने मुग़ल संस्कृति के उत्कर्ष में योगदान देते हुए कलाकारों, विद्वानों और कवियों को संरक्षण दिया।

9. मृत्यु और उत्तराधिकार**:** दुर्भाग्य से, हुमायूँ का शासनकाल छोटा हो गया। अपने साम्राज्य को पुनः प्राप्त करने के ठीक एक साल बाद 27 जनवरी, 1556 को उनकी मृत्यु हो गई। उनका उत्तराधिकारी उनका पुत्र अकबर बना, जो आगे चलकर महानतम मुगल सम्राटों में से एक बना।

10. विरासत**:** जबकि हुमायूँ का शासनकाल चुनौतियों और अस्थायी असफलताओं से चिह्नित था, मुगल संस्कृति और भारत में मुगल शासन की स्थापना में उनके योगदान ने उनके बेटे अकबर के तहत साम्राज्य के विस्तार और सुदृढ़ीकरण की नींव रखी।

हुमायूँ का जीवन और शासनकाल भारत में मुगल इतिहास के पाठ्यक्रम को आकार देने में सहायक था, और उसका राजवंश उपमहाद्वीप में सबसे प्रभावशाली और स्थायी राजवंशों में से एक बन गया।